श्रावण-अश्विन, विक्रम संवत् २०७८
जुलाई-सितम्बर, २०२१

ISSN : 0378-391X
भाग-८२, अंक: ३
यूजीसी केयर लिस्ट क्रमांक '२७'

हिन्दुस्तानी

त्रैमासिक

शताब्दी की ओर

महारानी लक्ष्मीबाई
पर केन्द्रित विशेषांक

सं०- उदय प्रताप सिंह

हिन्दुस्तानी एकेडेमी उ.प्र., प्रयागराज

'झाँसी की रानी' : वृदांवन लाल वर्मा

निरंजन कुमार यादव

इतिहास जिन्हें उपेक्षित कर देता है साहित्य उसे मुख्यधारा में ले आता है। इतिहास में जिस समाज और वर्ग को स्थान नहीं मिलता उन्हें साहित्य स्थान देता है। झांसी का इतिहास तो बहुत समृद्ध है। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई स्त्री जाति की गौरव हैं। शौर्य साहस और पराक्रम की मिशाल हैं। हिन्दी कविता और कथा साहित्य में लक्ष्मीबाई को इस रूप में याद किया गया है। कविता में सुभद्रा कुमारी चौहान ने और कथा साहित्य में वृदांवन लाल ने जैसा चरित्र लक्ष्मीबाई का खीचा है वैसा कहीं किसी और का दुर्लभ है।

हिंदी कथा साहित्य के 'वाल्टर स्कॉट' कहे जाने वाले वृदांवनलाल वर्मा (१८८९-१९६९) प्रेमचन्द्र के समान ही हिंदी साहित्य के एक महत्वपूर्ण कथाकार हैं। इन्होंने मृगनयनी, झाँसी की रानी, टूटे काटें कचनार, विराटा की पद्मिनी, गढ़ कुंडार, भुवन विक्रम और रानी दुर्गावती सरीखे लगभग २० उपन्यासों से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। वृंदावनलाल वर्मा की पहचान एक ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में है। ऐसा भी नहीं है कि इनके उपन्यास यथार्थ जीवनानुभूतियों से प्रेरित नहीं हैं किन्तु ऐतिहासिकता के आलोक में वे धूमिल पड़ गये हैं। इन्होंने भी जीवन को उसके समग्र रूप में देखने का प्रयास किया है, जिसके फलस्वरूप इनके उपन्यास में एक व्यापकता और विशालता हमें देखने को मिलती है। किन्तु कथानक की ऐतिहासिकता के कारण इनकी एक खास पहचान 'ऐतिहासिक उपन्यासकार' के रूप में मान्य ही है।

वृंदावनलाल वर्मा ने अपने उपन्यासों में (भुवन विक्रम को छोड़कर जो उत्तर वैदिक काल की कथा है) विक्रम की चौदहवीं शताब्दी से लेकर आधुनिक युग के ऐतिहासिक काल-खण्डों को ही ग्रहण किया है। इसमें भी मनुष्यतः भारत और बुंदेलखण्ड के वीर पुरुषों एवं स्त्रियों को अद्‌भुत एवं जीवन्त रूप में चित्रित किया है। जिसमें उन्हें ऐतिहासिक, वातावरण-निर्माण, तत्कालीन, सामाजिक-धार्मिक, राजनीतिक परिस्थितियों, नवोद्‌बुद्ध सामयिक प्रक्रियाओं एवं राष्ट्रीय भावनाओं के उपयोग में

लक्ष्मीबाई के विशाल आदर्शों में विलीन हो गई।" ऐसे ही छिपपुट वाक्य मिलते हैं, किन्तु जहाँ मिलते हैं, वहाँ सूत्रवत मिलते हैं।

'झाँसी की रानी' हिन्दी उपन्यास है। लेखक और कथा नायक दोनों हिन्दी प्रेमी है; लेकिन कथानक का परिवेश और लेखक की मातृ भाषा दोनो बुन्देली है। इसलिए उपन्यास में बुन्देलखण्डी भाषा का सौन्दर्य भी मिलता है। बुन्देलखण्ड की कहावते, मुहावरे, लोकगीत आदि का उपयोग, 'झाँसी की रानी' उपन्यास की महत्ता में चार चाँद लगा देते हैं। उपन्यासकार ने बुन्देली बोली का प्रयोग झाँसी के स्थानीय लोगों से ही कराया है। 'झाँसी की रानी' उपन्यास में अनेक बुन्देली शब्दों सरकना, कदाच, अनखाये, दिदकार, निहोर, डाँग, हाँका, रौरा, चेथरी, रावली, मेंवड़े, करमीले, दुलैया, काए, आदि का सार्थक प्रयोग हुआ है। जिसमें उपन्यास में स्थानीयता का रंग निखर उठा है। उपन्यास पढ़ते वक्त सिर्फ वहाँ (झाँसी) की जनता का साहस, धैर्य और का ही मानस पटल पर दृश्य नहीं बनता साथ-ही-साथ वहाँ का बोल-बाना भी सुनने को मिलता है। रामविलास शर्मा का मत है कि 'प्रेमचन्द्र की तरह वर्मा जी के पात्र भी खड़ी बोली का ही प्रयोग करते हैं लेकिन उनकी खड़ी बोली बुन्देलीखण्डी रंग में रंगी होती है। उसे सुनकर ऐसा लगता है कि गाँव के लोग खड़ी बोली बोलेंगे तो ऐसे ही। लेकिन जहाँ वर्मा जी अपने पात्रों को बुन्देलखण्डी में बोलने देते हैं, वहाँ के संवादों की सरसता का क्या कहना।" झाँसी की रानी जब हरदी-कूँ कूँ उत्सव के अवसर पर झलकारी से नाम पूछती है, उत्तर मिलता है 'सरकार झलकारी दुलैया।' इस दुलैया शब्द की मधुरता पर राम विलास शर्मा भी मुग्ध हो जाते हैं "झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' में झलकारी के दो बोल अमर है। इस दुलैया के आगे देव, बिहारी, मतिराम सब मात है। उस शब्द की व्यंजना शक्ति को उनके सवैया घनाक्षरी पा नहीं सकते।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वृंदावन लाल ने अपने उपन्यास के माध्यम से झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का जैसा सामाजिक सांस्कृतिक एवं लोकधर्मी वीरांगना का चरित्र अंकित किया है वह इतिहास में दुर्लभ है

असि० प्रोफेसर
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर
उत्तर प्रदेश मो० ८७२६३७४०१७

❑❑❑